एक अत्यन्त सामयिक पुस्तक—मां

मक्सिम गोर्की (1868-1936) साहित्य में वह पहले लेखक थे जिन्होंने साफ तौर पर मजदूर वर्ग की युग परिवर्तनकारी ताकत को पहचाना, उसके भीतर छिपे मानवता के उज्ज्वल भविष्य को देखा, मानवता और जिन्दगी के प्रति उसके उद्दाम आवेग से भरे प्यार की रोशनाई में अपनी लेखनी डुबाई और हेनरिक मान के शब्दों में, ''पहली बार साहित्य में उस वर्ग के प्रतिनिधियों को हीरो के रूप में पेश किया जिनका अब तक कभी प्रतिनिधित्व नहीं हुआ था।'' पहली बार मेहनतकशों की जिन्दगी, उनकी ताकत, उनके अतल प्यार, उनकी बेइन्तहा नफरत, उनकी अपूर्व संघर्षशीलता को, उनके पूरे समाज को, उनके मूल्यों-मान्यताओं को और उनके द्वारा लाये जाने वाले सुनहरे नव विहान को गोर्की ने साहित्य के फलक पर उकेरा।

आज जब सिर्फ हमारे देश में ही नहीं पूरी दुनिया के पैमाने पर पूंजीवादी कोढ़ का नासूर बह निकला है, जर्जर और अमानवीय पूंजीवाद का वास्तविक चेहरा सभी के सामने उजागर हो चुका है, जब पूंजीवाद इतिहास को आगे बढ़ाने वाली तमाम भौतिक और आध्यात्मिक शक्ति खो चुका है तब इतिहास को अग्रगामी गति देने वाले वर्ग को केन्द्र में रखकर लिखी गयी, गोर्की की अमर कृति, 'मां' एक सामयिक पुस्तक बन जाती है।

तत्कालीन रूस के मजदूरों के जीवन और उनके संघर्षों का यह चित्र हमारे देश पर भी उतनी ही तीक्ष्णता से लागू होता है। हम इस अंक में उसी अमर उपन्यास का एक परिचय छाप रहे हैं जो पूरे विश्व साहित्य के विकासक्रम में मील का पत्थर कहा जाता है।

❑ सत्यव्रत

मक्सिम गोर्की के विश्व प्रसिद्ध उपन्यास 'मां' के केन्द्र में रूस के निझनी नोवगोरोद नामक कस्बे के उपनगर सोर्मोवो के मजदूरों द्वारा 1902 के मई दिवस के उपलक्ष्य में किया गया प्रदर्शन है। यह प्रदर्शन और बाद में प्रदर्शनकारियों पर चलाया गया मुकदमा इस उपन्यास की केन्द्रीय वस्तु है। उपन्यास के दो प्रमुख चरित्रों—मां पेलागेया निलोवना और पुत्र पावेल व्लासोव के लिए मुख्यत: सोर्मोवो की एक मजदूर महिला और पुत्र प्योत्र जालोमोव, जिसे 1902 के मई दिवस में भाग लेने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था और बाद में निर्वासन की सजा भी दी गयी थी, के जीवन को आधार के रूप में प्रयोग किया गया है : इसके अतिरिक्त अन्य कई पात्रों को भी वास्तविक जीवन के चरित्रों से उठाया गया है।

लेकिन इस उपन्यास की प्रमुख विशेषता इसके पात्रों का वास्तविक व्यक्तियों के जीवन से मेल खाना नहीं, वरन उस प्रक्रिया को दर्शाना है जिसके द्वारा तत्कालीन रूस के आम मजदूर और किसान राजनीतिक रूप से जागरूक हो रहे थे, यहां यह बात ध्यान रखने योग्य है कि जिस राजनीतिक चेतना के विकास की प्रक्रिया को गोर्की अपने उपन्यास के जरिये प्रमुखता से उभार रहे थे, उसी चेतना के फलस्वरूप 1905-07 की असफल क्रान्ति की भयानक हार और दमन के बावजूद मात्र बारह वर्ष के अन्तराल में केवल रूस में ही नहीं वरन् समूचे विश्व में एक नया इतिहास रचा गया—सोवियत संघ की नवम्बर, 1917 की समाजवादी क्रान्ति जिसने समूचे विश्व और उसके भविष्य को दूरगामी तौर पर प्रभावित किया।

तत्कालीन रूस के मजदूरों का जीवन किसी भी दृष्टि से विश्व के किसी भी देश के मजदूरों के जीवन से भिन्न नहीं था। गोर्की में इस जीवन के प्रति गहरी वितृष्णा है जो उपन्यास के प्रथम कुछ पृष्ठों में ही स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आती है। मशीनी यांत्रिकता से जुड़ा एक आम मजदूर का चिड़चिड़ा और झगड़ालू स्वभाव उसके पारिवारिक और सामाजिक जीवन में हर पल और हर क्षण एक ऐसा जहर घोलता रहता है कि वह जीवन किसी भयावह नरक की कल्पना से भी अधिक यंत्रणादायी दिखायी देता है। गोर्की द्वारा 1907 में खींचा गया रूसी मजदूरों का यह नीरस, यांत्रिक और नारकीय जीवनचित्र हमारे अपने देश के मजदूरों के जीवन के कितना निकट है इसे सहज ही महसूस किया जा सकता है और ऐसा ही महसूस करती थी मां पेलागेया निलोवना ज़ब मजदूर बस्ती के उसके छोटे से मकान में पावेल और उसके साथी अपनी अध्ययन मंडली में दूर देश के मजदूरों के जीवन के बारे में बातें करते थे, उनके संघर्षों की विजय में खुशी का एहसास करते थे और असफलता में दुख का। वहीं उसके उस छोटे से कमरे में सोर्मोवो के मजदूरों में समूची दुनिया के मजदूरों के साथ भाईचारे के भाव का एहसास उत्पन्न होना शुरू हुआ।

प्रबन्ध की दृष्टि से उपन्यास दो खण्ड में है। प्रथम खण्ड में पेलागेया निलोवना और उसके शराबी और झगड़ालू पति मिखाईल व्लासोव के दाम्पत्य जीवन का एक संक्षिप्त चित्र खींचा गया है जो अन्य लाखों मजदूरों के जीवन की ही तरह है जिनके लिए दिन की शुरुआत कारखाने की सीटी की कर्कश चीख के साथ होती है, दिन मशीनों के शोर और कालिख के बीच बीतता है और अन्त होता है शराब और परिवार में गाली-गलौज के साथ। आकार की दृष्टि से मिखाईल व्लासोव उपन्यास के प्रबन्ध में एक बहुत ही छोटा स्थान पाता है लेकिन उसका सम्पूर्ण जीवन आम मजदूरों के जीवन का अत्यन्त ही तीक्ष्णता से प्रतिनिधित्व करता है। उसकी मृत्यु के पश्चात उसके बेटे पावेल ने भी उसी ढर्रे को अपनाने की कोशिश की लेकिन उसके भीतर एक ऐसी बेचैनी थी, एक ऐसी छटपटाहट थी जिसने जल्द ही उसके रास्ते को बदल दिया। कारखाने और मजदूर बस्ती का जो जीवन अन्य हजारों मजदूरों को अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होता था पावेल के लिए दमघोंटू था। पावेल के नितान्त भिन्न किस्म के साथी, उसकी पुस्तकों में रुचि, शराब और अश्लील भाषा के प्रति उसकी नफरत, उसका हर सप्ताहान्त में शहर जाना, छुट्टी के समय में घर के कामों में मां की मदद करना जैसी ढेरों दूसरी चीजें उसके व्यवहार में थीं जो पेलागेया निलोवना के लिए सुखद तो थीं लेकिन साथ ही एक अनजाना सा भय भी लिये हुई थीं। इस तरह का व्यवहार उसके लिए अनजाना था। उसका समूचा जीवन अपने पति की

गालियां सुनते, उसके हाथों मार खाते बीता था जहां वह हमेशा एक छोटी सी चुहिया की तरह भयभीत रहती थी। इस जीवन को जीते हुए वह दुख, उपेक्षा और अपमान सहने की आदी हो चुकी थी, वह इसे जीवन का स्वाभाविक और अनिवार्य पहलू मान चुकी थी। उसके आस-पास के तमाम मजदूर परिवारों का जीवन भी इससे भिन्न नहीं था। अत: इस जीवन क्रम में परिवर्तन उसके लिए सुखद तो था लेकिन अविश्वसनीय भी।

पावेल, अन्द्रेई नखोदका, निकोलाई वेसोवश्चिकोव और शहर के साथी नताशा, साशा जैसे लोगों द्वारा शुरू किया गया अध्ययन चक्र जोर पकड़ने लगा। मां के लिए ये सभी लोग एक अजनबी दुनिया से आये हुए लगते थे। उत्साह, उमंग, उल्लास और प्रेम से छलकती उन लोगों की दुनिया उसे स्वयं अपने जीवन की याद दिलाती थी, उसे अपनी युवावस्था की उन पार्टियों की याद आती थी जहां शराब से चूर लोग आपस में लड़ते, एक दूसरे पर अश्लील गालियों की बौछार करते और लज्जा के मारे उसका सर झुक जाता। पावेल और उसके साथियों के बीच होने वाले बहस-मुबाहिसों से वह धीरे-धीरे समझने लगी कि जिस दुख, उपेक्षा और अपमान को वह जीवन का स्थायी और अनिवार्य पहलू मान चुकी थी वह हमेशा से ऐसा नहीं था। एक समय ऐसा भी था जब इंसान बराबर होते थे, जब कोई मालिक और कोई उसके लिए काम करने वाला मजदूर नहीं होता था जब ईर्ष्या, द्वेष और कलह का साम्राज्य नहीं था, जब लोग एक दूसरे के खून के प्यासे नहीं थे। धीरे-धीरे वह यह भी समझने लगी कि जब से गैर बराबरी पैदा हुई तभी से उसके विरुद्ध संघर्ष भी प्रारम्भ हो गया और उसके बाद यह संघर्ष हर युग और हर देश में हर समय चलता रहा है।

जल्द ही पावेल और उसके साथियों के द्वारा मजदूरों के लिए पर्चे छापे जाने लगे। सीधी-सादी भाषा में लिखे इन पर्चों में मजदूरों को बताया जाता था कि उनकी लगातार गिरती हुई हालत के क्या कारण हैं, मालिक लोग किस तरह छल प्रपंच रच कर उन्हें लूटते रहते हैं, इस लूट के विरुद्ध किस प्रकार रूस के दूसरे हिस्सों में और दुनिया के दूसरे देशों में मजदूर अपनी लड़ाई को जारी रखे हुए हैं। पर्चों में छपी सच्चाई से मजदूर प्रभावित तो होते थे लेकिन अपने आपको असहाय और असंगठित पाते थे। इस सबके बावजूद मजदूर बस्ती के अधिकांश मजदूर पावेल और उसके साथियों की ईमानदारी, संघर्षशीलता को दिल ही दिल में चाहने लगे। और एक कोपेक की घटना के बाद तो उनका सिक्का ही जम गया।

कारखाने के पास की जमीन दलदली थी। नया डाइरेक्टर दलदल को सुखाकर जमीन को इस्तेमाल लायक बनाना चाहता था। इसके लिए उसने प्रत्येक मजदूर के वेतन से एक कोपेक (रूसी पैसा) की कटौती का आदेश जारी किया। स्वत:स्फूर्त ढंग से ही मजदूरों में इस पर तीखी प्रतिक्रिया हुई। काम बन्द कर सभा का आयोजन किया गया जिसमें कारखाने के बुजुर्ग मजदूरों के आग्रह पर अस्वस्थता के बावजूद पावेल ने भी भाग लिया। यद्यपि उसका प्रस्ताव, कि इस कटौती के विरोध में काम बन्द कर दिया जाये, मजदूरों के बहुमत को स्वीकार्य नहीं था फिर भी प्रबन्धकों द्वारा घबराकर कटौती को वापस ले लिये जाने के कारण पावेल और उसके साथियों की लोकप्रियता बढ़ी। लेकिन जब इस घटना के तुरन्त बाद पुलिस ने पावेल और अन्य कई मजदूरों को गिरफ्तार कर लिया तो एक बार पुन: पस्तहिम्मती और निराशा का आलम छाने लगा।

ऐसे समय में मां, जो अब तक अपने बेटे और उसके साथियों के उद्देश्यों को काफी हद तक समझ चुकी थी, ने अपने बेटे के कामों में भागीदारी का निश्चय किया। पेलागेया निलोवना का दयालु और न्यायप्रिय हृदय, उसकी नेकी और जीवन के बारे में उसकी दृष्टि, पावेल की गिरफ्तारी पर उसके दुख के बावजूद, उसे अपने बेटे का रास्ता अपनाने पर विवश कर देती है। छिपे तौर पर पर्चों का वितरण जारी रहता है।

पावेल और उसके साथियों की जेल से रिहाई के बाद जोर-शोर से मई-दिवस मनाने की तैयारियां शुरू कर दी जाती हैं। वे लोग महसूस करने लगे थे कि अब उन्हें खुले रूप में सबके सामने अपने उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से रखना चाहिए। मजदूरों की तैयारी के समानान्तर प्रशासन की तैयारियां भी गति पकड़ती हैं। और जब पहली मई को प्रदर्शन के दौरान मजदूरों को पता चलता है कि पुलिस के साथ स्वयं गवर्नर मौके पर पहुंचा हुआ है तो वे भी जो प्रदर्शन में शामिल नहीं थे इन बहादुर नौजवानों के प्रति आकर्षित होने लगे। मई दिवस प्रदर्शन और प्रदर्शन के बाद हुई गिरफ्तारियों के साथ ही उपन्यास का प्रथम खण्ड समाप्त होता है।

प्रथम खण्ड के आरम्भ में अपनी जैसी ही हजारों मेहनतकश औरतों की तरह पेलागेया निलोवना पूरी जिन्दगी मेहनत करते हुए अपने शराबी पति के लड़ाई झगड़ों और मार-पीट से बेहद दुखी, जीवन की सारी खुशियों से वंचित है। पर जब उसका बेटा पावेल कारखाना बस्ती के लोगों की जिन्दगी के ढर्रे को छोड़कर क्रान्तिकारी बन जाता है तो इस नयी चीज को बाल सुलभ उत्सुकता से समझने की कोशिश करती हुई मां पेलागेया निलोवना स्वयं भी उसी रास्ते को अपना लेती है। अन्द्रेई जैसे मजदूर साथियों और किसान रीबिन जैसे चरित्रों के रूप में नई दुनिया के नये लोग सामने आते हैं और सामने आती है संघर्ष प्रक्रिया की पवित्र आग में तपकर सामान्य लोगों के आन्तरिक कायाकल्प की कहानी। पावेल और उसके साथी जिस नयी दुनिया के लिए संघर्ष कर रहे हैं अन्द्रेई उसका एक बहुत ही सजीव चित्र खींचता है **"मैं जानता हूं कि एक समय ऐसा अवश्य आयेगा जब लोग स्वयं अपने सौन्दर्य पर चकित होंगे, जब उनमें से प्रत्येक दूसरे के लिए एक तारे की तरह उज्जवल होगा। पृथ्वी पर आजाद इंसानों का वास होगा। सभी के दिल विशाल होंगे और ईर्ष्या और द्वेष नहीं होगा। और तब प्रकृति इन्सान की सेवा करेगी और उदात्त और मानवीय मूल्यों का साम्राज्य कायम होगा क्योंकि आजाद इंसानों के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। और तब लोग सच्चाई और आजादी के साथ जियेंगे, जीवन के सौन्दर्य के लिए जियेंगे, और सबसे सुन्दर, सबसे अच्छे वही लोग होंगे जो समूची दुनिया को प्यार करते हों। नये जीवन के वे लोग महान लोग होंगे। और ऐसे जीवन के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं।"**

उन लोगों के लिए जो हिंसा-अहिंसा के सवाल को लेकर एक अन्तहीन बहस में उलझे रहते हैं, जो अत्याचारी शासन के द्वारा सैकड़ों तरीकों से प्रतिदिन और प्रतिपल होने वाली हिंसा से तो आंखें मूंदे रहते हैं परन्तु विरोध में उठे किसी कदम को हिंसक करार दे देते हैं—उनके लिये एक बेहद शानदार उत्तर अन्द्रेई के शब्दों में, "आज हम कुछ लोगों से नफरत करने के लिए मजबूर हैं, ताकि एक ऐसा समय आये जब हम सबसे प्यार कर सकें। जो कोई भी प्रगति के मार्ग में बाधक है, जो कोई भी स्वयं अपने लिये सम्मान और सुरक्षा के लालच में लोगों को बेचता है, हमारा शत्रु है। यदि कोई जूडस ईमानदार लोगों के मार्ग में बाधा खड़ा करता है तो मैं स्वयं जूडस कहलाऊंगा यदि मैं उसका खात्मा नहीं करता। तुम कहते हो मुझे कोई अधिकार नहीं है? लेकिन **वे हमारे मालिक—क्या उनके पास सेनाएं, जल्लाद, वेश्यालय और जेलखाने, निर्वासन के स्थान और वो सब अभिशप्त साधन**

रखने का अधिकार है जिनके जरिये वे अपनी सुविधाओं की रक्षा करते हैं? यदि मुझे हथियार उठाने पर विवश होना पड़ता है तो क्या यह मेरा दोष है? मैं इसे बिना किसी उलझन के उठाऊंगा। यदि वे हमें सैकड़ों की तादाद में मौत के घाट उतारते हैं तो यह मेरा भी अधिकार है कि मैं अपना बाजू उठाऊं और उसके सर पर चोट करूं जो दूसरों की अपेक्षा मेरे अधिक निकट आ गया है और जो दूसरों की तुलना में मेरे उद्देश्य को अधिक हानि पहुंचा सकता है। जीवन ऐसा ही है। लेकिन मैं ऐसे जीवन के विरुद्ध हूं, मैं नहीं चाहता कि यह ऐसा हो। मैं जानता हूं कि उनके खून से कुछ भी नहीं पैदा होगा, यह बांझ है। जब हमारा रक्त वर्षा की बौछार की तरह पृथ्वी पर बिखरता है तो सच्चाई जन्म लेती है। लेकिन उनका खून तो बस सूख जाता है।''

और पावेल के शब्दों में, ''यह अपराध है, मां। लाखों लोगों की हत्या। इंसानी आत्माओं की हत्या। क्या तुम इसे समझती हो? आत्मा के हत्यारे। क्या तुम हमारे और उनके बीच की भिन्नता को समझती हो? जब हम किसी को मारते हैं तो यह हमारे लिए घृणास्पद, लज्जाजनक और पीड़ादायी होता है। लेकिन वे हजारों लोगों को अत्यन्त निर्ममता से ठण्डेपन के साथ मार देते हैं और इससे उन्हें कोई बेचैनी नहीं होती वरन सन्तोष होता है। और वह एकमात्र कारण, जिसके लिए वे लोगों को मौत के घाट उतारते हैं, उस सोने और चांदी की सुरक्षा जिसकी बदौलत वे हमें अपना गुलाम बनाये रखते हैं। जरा सोचो तो—जब वे हत्या करते हैं और अपनी आत्मा को कलुषित करते हैं तो वे अपने जीवन की सुरक्षा नहीं कर रहे होते हैं बल्कि सम्पत्ति की। ऐसी चीजें जो इंसान से बाहर हैं, वे नहीं जो उसके भीतर हैं।''

द्वितीय खण्ड में पूर्णतया मां का आधिपत्य है। पावेल की गिरफ्तारी के बाद वह कारखाना बस्ती के मकान को छोड़कर पावेल के ही साथी निकोलाई इवानोविच के यहां जाकर रहने लगती है और पूरी तरह से एक नयी दुनिया, एक बेहतर दुनिया के संघर्ष में अपनी भूमिका निभाने लगती है। वह गांव के किसानों के लिए छपे अखबार और पर्चों को दूर दराज के स्थानों पर पहुंचाती है, जेल से भागे साथियों के लिए छिपने के स्थान का बन्दोबस्त करती है, घायल साथियों की देखभाल और सेवा सुश्रूषा का काम करती है। यह सब करते हुए वह सिर्फ पावेल ही नहीं उन सबकी मां का स्थान ग्रहण कर लेती है जो एक न्यायपूर्ण युद्ध के सैनिक हैं।

इस द्वितीय खण्ड में मुख्य रूप से शहरी पृष्ठभूमि के मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का वर्णन है जो क्रान्ति के कार्य में अपनी सहयोगी भूमिका निभा रहे थे। गोर्की की पैनी दृष्टि इन मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों की कमियों को भी भेदती है। निकोलाई इवानोविच की बहन सोफिया के बारे में गोर्की कहते हैं, ''सोफिया उस किशोरी की तरह थी जो चाहती है कि दूसरे उसके साथ वयस्कों जैसा व्यवहार करें। वह श्रम की पवित्रता के बारे में बातें करती थी लेकिन अपने अव्यवस्थित व्यवहार से हमेशा मां का काम बढ़ाती रहती थी : वह स्वतंत्रता के बारे में बड़ी ऊंची-ऊंची बातें करती थी लेकिन अपनी असहिष्णुता और अन्तहीन तर्कों से हमेशा दूसरों को दबाती रहती थी।'' निकोलाई इवानोविच के बारे में वह मां के जरिये कहते हैं, ''खोखोल की तरह वह लोगों के बारे में बिना किसी द्वेष के बात करता था, संसार की बुराइयों के लिए वह सभी को दोष देता था लेकिन नये जीवन में उसका विश्वास अन्द्रेई की तरह उत्कट नहीं था और न उस जितना स्पष्ट।'' लेकिन इस सबके बावजूद क्रान्ति में मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि से आये बुद्धिजीवियों की भूमिका के प्रति गोर्की पूरा न्याय करते हैं।''

द्वितीय खण्ड के कथानक की मुख्य घटनायें हैं—मां और सोफिया द्वारा किसानों के लिए छपे अखबार और पर्चों को रीबिन तक पहुंचाना, येगोर इवानोविच नामक एक साथी की मृत्यु के बाद कब्रिस्तान में पुलिस द्वारा लाठीचार्ज, रीबिन की गिरफ्तारी, पावेल और उसके साथियों पर मुकदमा और निर्वासन की सजा, अदालत में पावेल द्वारा दिये गये भाषण के आधार पर छापे गये पर्चे को एक स्थान पर पहुंचाते हुए मां की गिरफ्तारी।

रीबिन के काम के स्थान पर मां और सोफिया का परिचय अन्य मजदूरों के अलावा एक ऐसे मजदूर से हुआ जो पूंजीपतियों के कारनामों की एक चलती-फिरती तस्वीर था। ''वे क्यों हमें काम के बोझ से मारते हैं? वे क्यों किसी इंसान की जिन्दगी को लूटते हैं? हमारा मालिक—मैं नेफेदेव कारखाने में काम करता था—मेरे मालिक ने एक अभिनेत्री को एक सोने का टब और एक सोने की चिलमची तोहफे में दी। मेरी पूरी शक्ति और समूचा जीवन उस बर्तन को बनाने में बीत गया!... एक व्यक्ति ने मुझे काम के बोझ से मार डाला ताकि वह मेरे रक्त से अपनी प्रेयसी को प्रसन्न कर सके! उसने मेरे जीवनरक्त से अपनी प्रेयसी के लिए सोने की चिलमची खरीदी!... मेरे मालिकों ने मुझे लूट लिया—मेरे जीवन के चालीस वर्षों की लूट—चालीस वर्ष।'' और रीबिन के शब्दों में, ''जब एक मशीन किसी मजदूर का बाजू काट देती है या उसकी जान ले लेती है तो वे कहते हैं कि मजदूर का दोष था। लेकिन जब वे एक व्यक्ति का समूचा रक्त चूस कर उसे कूड़े की तरह फेंक देते हैं तो इसका कोई कारण नहीं दिया जाता। वे क्यों हम सब पर अत्याचार करते हैं? सिर्फ मजे के लिए, अपनी खुशी के लिए ताकि वे इस पृथ्वी पर मौज कर सकें—इन्सानी खून की कीमत पर जो चाहे खरीदें—अभिनेत्रियां, दौड़ के घोड़े, चांदी के चाकू, सुनहरी तश्तरियां, बच्चों के लिए महंगे खिलौने।''

मुकदमे के दौरान पावेल द्वारा दिया गया बयान समूचे संघर्ष की अन्तर्वस्तु को नपे-तुले शब्दों में स्पष्ट रूप से सामने रख देता है। वह कहता है, ''हम क्रान्तिकारी हैं और जब तक इस पृथ्वी पर कुछ लोग बैठे-बैठे आदेश देते रहेंगे और दूसरों को आज्ञापालन में काम करना होगा, हम क्रान्तिकारी ही रहेंगे। जिस समाज के स्वार्थों की रक्षा करने के लिए तुम्हें आदेश दिया गया है हम उस समाज के विरुद्ध हैं; हम तुम्हारे और तुम्हारे समाज के दृढ़प्रतिज्ञ शत्रु हैं और जब तक हमारी विजय नहीं होती, हमारे बीच कोई भी मेल-मिलाप असम्भव है। और यह निश्चित है कि विजय हम मजदूरों की ही होगी। तुम्हारे मालिक उतने शक्तिशाली नहीं हैं जितना कि वे सोचते हैं।'' और यद्यपि उपन्यास का अन्त पावेल और उसके साथियों के निर्वासन और मां की गिरफ्तारी के साथ होता है, इसके बावजूद पाठक के लिए मजदूर वर्ग की विजय निश्चित दिखायी देती है, मां के इन शब्दों में, ''रक्त का समूचा सागर भी सच्चाई को नहीं डुबो सकता।''

''उन किताबों से प्यार करो जो ज्ञान का स्रोत हों, क्योंकि सिर्फ ज्ञान ही वन्दनीय होता है; ज्ञान ही तुम्हें आत्मिक रूप से मजबूत, ईमानदार और बुद्धिमान, मनुष्य से सच्चा प्रेम करने लायक, मानवीय श्रम के प्रति आदरभाव सिखाने वाला और मनुष्य के अथक एवं कठोर परिश्रम से बनी भव्य कृतियों को सराहने लायक बना सकता है।''

— मक्सिम गोर्की